Patrika Date: 25.09.2019

'प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी ऑफ खरीफ क्रॉप' कार्यक्रम 25 को

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ श्री वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर, श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर द्वारा एक दिवसीय नेशनल कॉन्फ्रेंस 'वक्सना 2019' का आयोजन 25 सितंबर को किया जाएगा।कॉन्फ्रेंस का विषय 'प्रोडक्शन टेक्नोलॉजी ऑफ खरीफ क्रॉप' है।

इसमें इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ सोयाबीन रिसर्च, इंदौर एवं इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टिट्यूट, स्कूल ऑफ लाइफ साइंस, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के वैज्ञानिक एवं वक्ता होंगे। इसमें लेक्चर्स, पेपर प्रजेंटेशन और पोस्टर प्रजेंटेशन शामिल होंगे। समन्वयक श्री वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर इंदौर के प्रोफेसर विनोद धर ने बताया, कॉन्फ्रेंस में उचित फसल उत्पादन और संरक्षण प्रौद्योगिकियों के लिए फसल विज्ञान शोधकर्ता अपना वतव्य साझा करेंगे। संयोजक डॉ. केएन गुरुप्रसाद ने बताया, यह कॉन्फ्रेंस देश भर के प्रसिद्ध कृषि शोधकर्ताओं, छात्रों, प्रतिनिधियों को एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करेगी।

दैनिक चैतन्य लोक

26 सितंबर 2019

भारत ने कृषि के क्षेत्र में बहुत बड़ी सफलता हासिल की, अधिक शोध करने की आवश्यकता : डॉ. धर

चैतन्य लोक » इंदौर
dainikchaitanyalok.com

श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर के श्री वैष्णव इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर ने 25 सितंबर को खरीफ फसल के उत्पादन प्रौद्योगिकी पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन वक्सना 2019 का आयोजन किया।

अपने स्वागत भाषण में, डॉ. उपिंदर धर, कुलपति श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्व विद्यालय, इंदौर ने कृषि उत्पादन के बारे में बताया और कहा कि भारत ने कृषि के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी सफलता हासिल की है, फिर भी इस क्षेत्र में अधिक शोध करने की आवश्यकता है। अध्यक्ष डॉ. के एन गुरुप्रसाद ने वक्सना 2019 की जानकारी दी और बताया की कृषि और नवाचारों के अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया जाना अतिआवश्यक है। उन्होंने विभिन्न संस्थानों द्वारा किए गए सोयाबीन अनुसंधान पर प्रकाश डाला और आगामी अनुसंधान के लिए संस्थानों के बीच सहयोग पर जोर दिया। सम्मेलन के विशेष अतिथि डॉ. ओपी जोशी, पूर्व निदेशक सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इंदौर ने दैनिक जीवन में सोयाबीन के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि भारत 13.5 मिलियन टन सोयाबीन का उत्पादन कर रहा है। उन्होंने यह भी बताया की भारत में 50 साल से सोयाबीन का व्यवसायिक उत्पादन हो रहा है। वक्सना 2019 के मुख्य अतिथि डॉ एस.वी. साई प्रसाद प्रिंसिपल साइंटिस्ट्स, आई ए आर आई रिजनल स्टेशन, इंदौर ने रबी फसल पर अपने विचार व्यक्त किए और उन्होंने ड्यूरम गेहूं के पोषण लाभों पर भी चर्चा की। सम्मेलन में दो सत्र थे, जिसमें शोधकर्ता, शिक्षक और छात्रों द्वारा 30 से अधिक शोध पत्र और पोस्टर प्रस्तुत किए गए। प्लिनरी सत्र के वक्ता डॉ. लक्ष्मण सिंह राजपूत, वैज्ञानिक सोयाबीन अनुसंधान केंद्र इंदौर, डॉ. अंजना जाजू, प्राध्यापक स्कूल ऑफ लाइफ साइंस, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, डॉ. महावीर पी शर्मा, प्रमुख वैज्ञानिक आईसीएआर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोयाबीन और डॉ. संजय गुप्ता प्रधान वैज्ञानिक आईसीएआर-आई एस एस आर आई थे सम्मेलन के समन्वयक प्रो. विनोद धर ने आभार प्रदर्शन किया।

पत्रिका

Date: 26.09.2019

वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर

कृषि क्षेत्र में नवाचार और अनुसंधान पर फोकस जरूरी

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ श्री वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर में खरीफ फसल के उत्पादन प्रौद्योगिकी पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन वक्सना 2019 हुआ। स्वागत भाषण में कुलपति डॉ. उपिंदर धर ने कृषि उत्पादन के बारे में बताया और कहा, भारत ने कृषि के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी सफलता हासिल की है, फिर भी इस क्षेत्र में अधिक शोध की आवश्यकता है।

अध्यक्ष डॉ. केएन गुरुप्रसाद ने वक्सना की जानकारी दी। उन्होंने कहा, कृषि और नवाचारों के अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करना अतिआवश्यक है। उन्होंने सोयाबीन अनुसंधान पर प्रकाश डाला और आगामी अनुसंधान के लिए संस्थानों के बीच सहयोग पर जोर दिया। सम्मेलन के विशेष अतिथि डॉ. ओपी जोशी पूर्व निदेशक सोयाबीन अनुसंधान संस्थान इंदौर ने दैनिक जीवन में सोयाबीन के महत्व को

बताया। उन्होंने कहा, भारत 13.5 मिलियन टन सोयाबीन का उत्पादन कर रहा है। देश में 50 साल से सोयाबीन का व्यवसायिक उत्पादन हो रहा है। मुख्य अतिथि आइएआरआइ रीजनल स्टेशन, इंदौर के प्रिंसिपल साइंटिस्ट्स, डॉ. एसवी साई प्रसाद ने रबी फसल पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने ड्यूरम गेहूं के पोषण लाभों पर भी चर्चा की। सम्मेलन में दो सत्र थे जिसमें शोधकर्ता, शिक्षक और छात्रों ने 30 से अधिक शोध पत्र और पोस्टर प्रस्तुत किए।